भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकवाद की भूमिका(1855ई०–1947 ई०) : एक ऐतिहासिक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

विश्वविद्यालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशिका:

डॉ० अमृता दत्ता

विभागाध्यक्ष

सहायक प्राध्यापक

योगदा सत्संग महाविद्यालय

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी :

शशांक शेखर

यूजीसी नेट

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकवाद की भूमिका(1855ई०–1947 ई०) : एक ऐतिहासिक अध्ययन

1. विषय का परिचय

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकवाद की भूमिका पर शोध का दायरा व्यापक और अंतः विषयक हो सकता है। जिसमें ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक तथा धार्मिक विश्लेषण के विभिन्न आयाम शामिल होंगे। प्रतीकवाद, किसी वस्तु को प्रतीकों के जरिए गहरा अर्थ या अलग गुणवत्ता देना है। प्रतीकवाद के जरिए साधारण तत्व, असाधारण महत्व प्राप्त करते हैं, प्रतीकवाद, बिना स्पष्टीकरण के गहरे अर्थ एवम भावनाओं को जगाने में मदद करता है। भारत का स्वतंत्रता संघर्ष जो मूलतः औपनिवेशिक शासन और भारतीयों के हितों के बीच मौजूद केंद्रीय या बुनियादी अंतर्विरोध का नतीजा था। यह अंतर्विरोध, इस बात से पैदा हुआ था, की ब्रिटिश सत्ता भारत पर अपने राजनैतिक प्रभुत्व का प्रयोग, ब्रिटिश समाज और अर्थव्यवस्था की जरूरतों के मुताबिक भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था का शोषण करने के लिए कर रही थी। ब्रिटिश सत्ता द्वारा किए जा रहे शोषण से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों द्वारा जो संघर्ष किया गया, उसे ही स्वतंत्रता संघर्ष कहा जाता है। प्रस्तावित शोध में स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकवाद ने अपनी भूमिका कैसे निभाई विश्लेषण करना है। विशेषकर भारत के संदर्भ में, जहां स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान प्रतीकों ने एकजुटता, राष्ट्रीय पहचान और आंदोलन की दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, ये प्रतीक न केवल जनता को संगठित करने का माध्यम बनी, बल्कि राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने और स्वतंत्रता संघर्ष को मजबूती देने में भी सहायक सिद्ध हुई, प्रतीक जिसमे दृश्य(रोटी, कमल, चरखा, खादी, नमक, झंडा, भारतमाता की छवि) अदृश्य जैसे(गीत, लोकगीत, लोककथा, नारे, लोक नाट्य) का उपयोग भारतीय समाज की विविधता में एकता लाने, जागृति उत्पन्न करने, तथा उनमें प्रतिरोध की भावना जगाने, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य किया जाता था।

प्रस्तावित शोध 1855 ई० से लेकर 1947 ई० तक की अवधि पर केंद्रित होगी। जिसमें 1855 ई० के संथाल विद्रोह, 1857 ई० का विद्रोह, नील विद्रोह, पबाना विद्रोह, रंपा विद्रोह, बिरसा मुंडा विद्रोह, नरम दल, गरम दल, स्वदेशी आंदोलन, गांधीवादी आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलन, जैसे प्रमुख विषयों को शामिल किया जाएगा। 1857 ई० के विद्रोह में कमल और रोटी को गांव-गांव में भेजे जाते थे जो विद्रोह की सूचना का प्रतीक था। इसके अतिरिक्त राष्ट्रवाद के बैनर तले विविध समुदायों को एकजुट करने में सांस्कृतिक प्रतीकों जैसे भारत माता, तिरंगा झंडा और धार्मिक छवियां जैसे हिंदू या मुस्लिम प्रतीकों का उपयोग, गीतों जैसे वंदे मातरम, इसके अलावा ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार हेतु खादी(हाथ से काटे गए कपड़े) को बढ़ावा देने और उद्योगों की प्रतीकात्मक वापसी जैसे आर्थिक कार्यों के प्रतीकात्मक महत्व का पता लगाया जा सकता है, इस बात का अध्ययन की कैसे समाचार पत्रों, पोस्टरों, पेंपलेटों ने स्वतंत्रता संग्राम के संदेश को फैलाने और सार्वजनिक जुड़ाव बनाए रखने के लिए प्रतीकों का उपयोग किया, इस पर अपना ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। हालांकि स्वतंत्रता संघर्ष की शुरुआत 1857 ई० के विद्रोह से मानी जाती है, लेकिन प्रस्तावित शोध में 1855 ई० के संथाल विद्रोह से समयावधि को लिया जायेगा, क्योंकि कई भारतीय इतिहासकारों ने इसे हुल क्रांति की संज्ञा दी है, इसके अलावा कार्ल मार्क्स ने संथाल विद्रोह को भारत का पहला जनक्रांति कहा। इसी विद्रोह में सर्वप्रथम नारा लगा करो या मरो, अबुआ राज (हमारा राज), इसके अतरिक्त पहली बार इसी विद्रोह की गूंज लंदन तक पहुंची, आंदोलनकारियों को नियंत्रित करने के लिए मार्शल लॉ लगानी पड़ी, बिरसा मुंडा विद्रोह से ज्यादा इस विद्रोह के दौरान लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी, इस विद्रोह की व्यापकता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है, इसलिए मैने अपने प्रस्तावित शोध प्रबंध में 1855 ई० से समय को लिया है, ताकि संथाल विद्रोह को यथोचित स्थान मिल सके।

1.1 साहित्य समीक्षा

अध्ययन किए गए साहित्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है :-

- दत्तोपंत ठेंगड़ी,(2008), *स्वदेशी आंदोलन*, इस पुस्तक में भारत के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के संदर्भ में स्वदेशी की अवधारणा को गहराई से समझाया गया है ,इसके अतिरिक्त इसमें स्वावलंबन के नारे,रविंद्रनाथ टैगोर द्वारा उस समय लिखे गीत जो नरमपंथियो और क्रांतिकारियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी का वर्णन मिलता है।लेकिन स्वदेसी आंदोलन ने अपने प्रचार के लिए,प्रतीकों के रूप में ,पारंपरिक त्योहारों, धार्मिक मेलों,लोक परंपराओं, लोक संगीत,लोक नाट्य मंचों का भी सहारा लिया,इसका जिक्र नहीं किया गया है।

- आशा कौशिक,(2001), पॉलिटिक्स सिम्बोल एंड पॉलिटिकल थियरी : रिथिंकिंग गांधी ,इस पुस्तक में गांधीवादी युग में प्रयोग होने वाले विभिन्न सामाजिक ,राजनीतिक, धार्मिक प्रतीकों,के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।गांधी द्वारा खादी,चरखा,गांधी टोपी आदि के उपयोग के उनके विचारों को जनसमूह तक पहुंचाने के प्रभावी तरीकों का जिक्र किया गया है।लेकिन इस पुस्तक में गांधीवादी प्रतीकों के समक्ष तत्कालीन समय में उभरने वाले चुनौतियों और विवादों पर प्रकाश नहीं डाला गया है।

- अहलूवालिया , बी. के शशि,(1981)- *गांधी टैगोर कंट्रोवर्सी*, इसमें गांधी और रविंद्रनाथ टैगोर के बीच ,विदेशी कपड़े जलाए जाने,खादी और चरखे को लेकर हुए विवादों का वर्णन मिलता है।जबकि खादी और चरखे को लेकर गांधी और एम. एन रॉय के बीच हुए विवादों पर प्रकाश नही डाला गया है।

- डॉ. सुरेश मिश्रा,(2019), *19वीं शताब्दी में जनजाति विद्रोह*- इस पुस्तक में औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आदिवासियों द्वारा किए गए विद्रोह ,संथाल

विद्रोह, बिरसा मुंडा विद्रोह में लोगों को एकजुट करने के लिए लोकगीत ने ,किस तरह से एक उपकरण के रूप में अपनी भूमिका निभाई इसका वर्णन मिलता है।लेकिन आदिवासी विद्रोह के दौरान , उनके पारंपरिक हथियार जैसे तीर धनुष की महत्वपूर्ण भूमिका रही है ,इसका जिक्र नहीं किया गया है।

- बिपिन चंद्र, (2015),*भारत का* स्वतंत्रता *संघर्ष*- इस पुस्तक में 1857 के विद्रोह के प्रतीकों, स्वदेशी आंदोलन के गीतों, नारों, गांधीवादी प्रतीकों में चरखा, खादी, नमक इत्यादि पर प्रकाश डाला गया है, लेकिन इन प्रतीकों के माध्यम से जनता में जागृति,एकजुटता और प्रतिरोध की भावना कैसे उत्पन्न हुई, इसका जिक्र नहीं किया गया है।

- बंकिमचंद्र चटोपाध्या, (2019),*आनंद मठ - इस* पुस्तक में संन्यासी विद्रोह और वन्देमातरम गीत का जिक्र किया गया है,लेकिन वन्देमातरम ने स्वंत्रता आंदोलन के दौरान,लोगों में कैसे जागृति की भावना पैदा की इसका जिक्र नहीं किया गया है।

1.2 शोध रिक्ति

यह अध्ययन जिस प्राथमिक शोध अंतराल को संबोधित करने का प्रयास कर रहा है, वह यह है कि भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकों ने लोगों के बीच जागृति,एकजुटता और प्रतिरोध की भावना को उत्पन्न करने में एक उपकरण के रूप में कैसे कार्य किया, इस पर गहरी जांच की कमी है, इसके अतिरिक्त तिरंगा झंडा, खादी,चरखा,जैसे प्रतीकों का उनके गहरे सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक महत्व,साथ ही विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह पर उनके प्रभाव को पर्याप्त रूप से नहीं खोजा गया है।इसके अलावा अधिकतर शोध में दृश्य प्रतीकों जैसे रोटी, कमल, झंडा, चरखा,पोस्टर,खादी पर ध्यान केंद्रित किया गया है। गैर -दृश्य प्रतीकों (जैसे नारे,गीत,लोकगीत,लोककथा) का अध्ययन करने से

प्रतीकवाद की एक नई परत उभर सकती है। इसके अतिरिक्त प्रतीकों के समक्ष तत्कालीन समय में उभरे चुनौतियों और विवादों पर भी व्यापक विश्लेषण की अनुपस्थिति एतिहासिक समझ में एक महत्वपूर्ण कमी उत्पन्न करती है।

1.3 समस्या का कथन

भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था ,बल्कि यह औपनिवेशिक शोषण के खिलाफ एक सांस्कृतिक और मानसिक लड़ाई भी थी। इस संघर्ष में प्रतीकों का उपयोग, लोगों को विभिन्न पृष्ठभूमियों, क्षेत्रों और समुदायों से जोड़ने में किया जाता था।तिरंगा झंडा ,चरखा, खादी, वंदे मातरम जैसे गीतों ने, धार्मिक, भाषाई, क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद, जनसंख्या को एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन प्रतीकों की भूमिका जन आंदोलन को प्रोत्साहित करने और सामूहिक राष्ट्रीय पहचान को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण थी। वर्तमान इतिहास लेखन में इन समस्याओं का पर्याप्त रूप से अध्ययन नहीं किया गया है।

1.4 शोध के उद्देश्य

- स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान हुए प्रमुख विद्रोहों में लोगों को एकजुट करने में प्रयुक्त प्रतीकों की भूमिका का विश्लेषण करना।
- स्वदेशी आंदोलन के दौरान राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने में प्रतीकों की भूमिका का अध्ययन करना।
- गांधी द्वारा उपयोग किए गए विभिन्न प्रतीकों का सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक, महत्त्व पर प्रकाश डालना।
- गांधी द्वारा उपयोग किए गए प्रतीकों के समक्ष उभरे समस्याओं का मूल्यांकन करना।
- क्रांतिकारी संगठनों के गतिविधियों और कार्यक्रमों में प्रतीकों की भूमिका का परीक्षण करना।

1.5 शोध परिकल्पना

- औपनिवेशिक शासन के खिलाफ हुए प्रमुख विद्रोह में प्रतीकों का उपयोग लोगों में जागृति,एकजुटता और प्रतिरोध की भावना को बढ़ावा देने के लिए किया जाता था।
- राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने और आंदोलन को मजबूती देने में स्वदेशी आंदोलन के दौरान प्रतीकों की भूमिका निर्णायक थी।
- गांधी ने प्रतीकों का उपयोग,सामाजिक भेदभाव को समाप्त करने,आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने और जनता को लामबंद करने के लिए किया।
- गांधी द्वारा उपयोग किए गए प्रतीकों को समकालीन नेताओं और सहयोगियों से चुनौतियों और विवादों का सामना करना पड़ा।
- क्रांतिकारी संगठनों के गतिविधियों और कार्यकर्मों में प्रतीकों की भूमिका निर्णायक थी।

2. शोध प्रारूप

2.1 शोध विधि

प्रस्तावित शोध भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में प्रतीकवाद की भूमिका की जांच करने के लिए, ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का अनुसरण करेगा। मुख्यतः प्राथमिक एवम् द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया जाएगा । यहां मिश्रित अनुसंधान पद्धति का उपयोग करते हुए गुणात्मक एवम् मात्रात्मक आंकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा। तथ्यों के संकलन हेतु, ऐतिहासिक दस्तावेजों, समाचार पत्रों, पुरानी तस्वीरों, स्वतंत्रता संघर्ष से संबंधित किताबें, पत्र पत्रिकाएं, स्वतंत्रता संग्राम के समय के व्यक्तित्वों के साक्षात्कार और उनके संस्मरणों का भी उपयोग किया जायेगा।कानूनी दस्तावेजों,व्यक्तिगत डायरी तथा विभिन्न भाषणों का अध्ययन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त समकालीन जिला गैजिटियर का भी उपयोग आंकड़ों के संकलन हेतु किया जायेगा।

2.2 आंकड़ा संग्रह हेतु उपकरण और तकनीक

कृत्रिम बौद्धिकता के युग में अब कई दस्तावेज ऑनलाइन उपलब्ध है,जो दुरस्त पहुंच के लिए डिजिटल संग्रह को मूल्यवान बनाते हैं। इसके अतरिक्त भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के प्रमुख समयावधि को कालानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित करके उसके प्रतिमानो की पहचान करने के लिए समय रेखाएं बना सकते हैं। विभिन्न संग्रहालयों, पुस्तकालयों तथा अभिलेखागारों का दौरा करके प्राथमिक एवं द्वितीयक डाटा प्राप्त किया जाएगा। शोध क्षमताओं को बढ़ाने के लिए विश्लेषण, विजुलाइजेशन और ऐतिहासिक मानचित्र के डिजिटल उपकरण को भी प्रयोग में लाया जाएगा।

2.3 आंकड़ों का विश्लेषण

ऐतिहासिक अनुसंधान में सटीक और सार्थक आख्यानों के निर्माण के लिए डाटा और तथ्यों का विश्लेषण महत्वपूर्ण होता है। इसके लिए कुछ विशेष दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है, सबसे पहले स्रोतों का मूल्यांकन करते हुए, प्राथमिक और द्वितीयक,स्रोतों की विश्वसनीयता, पूर्वाग्रह और संदर्भ का आकलन किया जाता है। जिसमें लेखक के दृष्टिकोण उद्देश्य और संभावित सीमाओं पर विचार किया जाता है। इसके बाद पारस्परिक सत्यापन के माध्यम से विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी की तुलना की जाती है ताकि समानताओं और विसंगतियों की पहचान कर डाटा की विश्वसनीयता को बढ़ाया जा सके। संदर्भीकारण के ऐतिहासिक संदर्भ को समझने के लिए राजनीतिक ,सामाजिक ,आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों का विश्लेषण किया जाएगा ,जो दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकते हैं, इसके अतिरिक्त आलोचनात्मक चिंतन के माध्यम से मान्यताओं पर सवाल उठाने ,व्याख्याओं को चुनौती देने और ऐतिहासिक आख्यानों की जटिलता को पहचानने का प्रयास किया जाएगा ,अंत में संश्लेषण के जरिए विभिन्न दृष्टिकोण को और डाटा के प्रकारों को मिलाकर अतीत की एक समेकित और बारीक समझ प्रस्तुत की जाएगी जो विभिन्न साक्ष्यों को एकीकृत करेगी।

3. शोध का महत्व

यह शोध स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान प्रतीकवाद ने अपनी भूमिका कैसे निभाई का गहन अध्ययन करके ,उनके ऐतिहासिक महत्व को उजागर करेगा ।इसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि इन प्रतीकों ने किस प्रकार से स्वतंत्रता के आंदोलन को नई दिशा दी और किस प्रकार से उन्होंने जनजागृति,एकजुटता,तथा प्रतिरोध की भावना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

4. वर्तमान समय में विषय की प्रासंगिकता एवं आवश्यकता

यह शोध न केवल अतीत के रुझानों की पहचान करेगा बल्कि भविष्य के लिए समाधान भी सुझाएगा। यह अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि कैसे यह प्रतीक चिन्ह आज भी भारत की सामूहिक चेतना में जीवित है।

5. वर्तमान ज्ञान में योगदान

यह शोध विभिन्न सामाजिक और जातीय समूहों द्वारा इन प्रतीकों को कैसे अपनाया गया, इसे भी जांच सकता है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी की कैसे अलग अलग समुदायों ने अपनी पहचान और संघर्ष को इन प्रतीकों से जोड़कर देखा। प्रतीक चिन्हों ने विभिन्न विचारधाराओं जैसे की गांधीवादी, क्रांतिकारी या समाजवादी के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इस अध्ययन से यह समझ जा सकता है कि विभिन्न राजनीतिक आंदोलन ने प्रतीकों का उपयोग कैसे किया और उनके माध्यम से जनता में विचारधारा का प्रसार किस तरह हुआ।

6. भविष्य के लिए कार्य

भविष्य के अनुसंधान कार्यों में किसी क्षेत्र विशेष जैसे झारखंड,छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, राजस्थान में हुए किसान या जनजातीय आंदोलन में प्रतीक चिन्हों ने अपनी भूमिका कैसे निभाई इस पर शोधार्थी अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त स्वतंत्रता

प्राप्ति के पश्चात प्रतीक चिन्हों की निरंतरता और परिवर्तन भी शोध का विषय हो सकता है।

7. प्रस्तावित अध्याय

भूमिका

प्रथम अध्याय :- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

द्वितीय अध्याय :- प्रमुख विद्रोहों में प्रतीकों की भूमिका।

तृतीय अध्याय :- स्वदेशी आंदोलन में प्रतीकों की भूमिका।

चतुर्थ अध्याय :- गांधी द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों का,सामाजिक,आर्थिक और राजनैतिक प्रभाव।

पंचम अध्याय :- गांधी द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों के समक्ष उभरे चुनौतियां और प्रतिवाद।

षष्ठम अध्याय :- क्रांतिकारी संगठनों में प्रतीकों की भूमिका।

निष्कर्ष

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ सूची

<u>संदर्भ सूची</u>

प्राथमिक स्रोत

1. अंबेडकर, बी. आर., एनीहिलेशन ऑफ कास्ट, नवजीवन पब्लिशिंग, न्यू दिल्ली, 1936।

2. भट्टाचार्य सब्यसाची, द महात्मा एंड द पोएट लेटर्स एंड डिबेट्स बिटवीन गांधी *एंड टैगोर 1915- 1941,* नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 1997।

3. गांधी, एम.के., एन ऑटोबायोग्राफी द नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1983।

4. चट्टोपाध्याय, बंकिम चंद्र, आनंद मठ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022।

5. गांधी के. एम (2005) की तो हेल्थ.अहमदाबाद इंडिया, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

6. गांधी, के. एम (2007), टुवर्ड्स न्यू एजुकेशन अहमदाबाद इंडिया,नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

7. गांधी, के. एम (2008),सत्याग्रह इन साउथ अफ्रीका,अहमदाबाद ,इंडिया ,नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

8. गांधी के.एम,(2011).फॉर्म योरावदा मंदिर अहमदाबाद,इंडिया नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

9. गांधी,के.एम,(2012), इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, अहमदाबाद,इंडिया नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

10. गांधी, एम. के (ई डी) भारतम कुमारप्पा खादी *(हैंड स्पम क्लॉथ),* वाई एंड हाउ,नवजीवन पब्लिशिंग हाउस,अहमदाबाद,(1959)।

11. कृपलानी, जे. बी,गांधियन थॉट,न्यू दिल्ली,गांधी स्मारक निधि(1961)।

द्वितीयक स्रोत

1. चंद्र, विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, (2015) हिंदी माध्यम क्रियान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

2. बोस, सुभाष चंद्र, (2023), भारत का संघर्ष, प्रभात प्रकाशन, न्यू दिल्ली।

3. गौड़, धर्मेंद्र, (2022), क्रांतिकारी आंदोलन के कुछ अधखुले पन्ने, साक्षी प्रकाशन, दिल्ली।
4. गुप्त, मन्मथनाथ, (2018), भारतीय क्रांतिकारी आंदोलन का इतिहास, आत्माराम एंड संश,न्यू दिल्ली।
5. गोयल, शिवकुमार, (2011), क्रांतिकारी आंदोलन, हिंदी साहित्य सदन, आगरा।
6. कुमार, प्रमोद, (2012), भारत का स्वतंत्रता संग्राम (1857 - 1947), नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
7. अय्यर, एस.ए, (2021), आजाद हिंद फौज की कहानी, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, न्यू दिल्ली।
8. सुल्तानपुरी, शंकर, (2021), क्रांतिकारी सुभाष, हिंदी साहित्य सदन, आगरा।
9. कॉल, लक्ष्मी जय, (2010), आधुनिक भारत के कर्मशील योद्धा नेताजी सुभाष चंद्र बोस, कला प्रकाशन, प्रयागराज।
10. सिंह, सत्यप्रकाश, (2021) नेताजी सुभाष चंद्र बोस: दस्तावेज पत्र डायरी (1933 -37), वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
11. शर्मा, महेश, (2017), स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
12. मीना, चांद, मंगल, (2019), जनजातीय इतिहास, रावत पब्लिकेशन ,दिल्ली।
13.अहलूवालिया, बी. के. शशि(1981), गांधी टैगोर कंट्रोवर्सी,पंकज पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली।
14. अली सादिक, (1999), द विजन ऑफ स्वराज गांधी संग्रहालय पटना।
15. चन्द्र बिपिन, (2010), स्वंत्रता संग्राम,नेशनल बुक ट्रस्ट,न्यू दिल्ली।
16. चैटर, राक्षाहारी,(2012), गांधी एंड अली ब्रदर बायोग्राफी ऑफ ए फ्रेंडशिप, सेज इंडिया।
17. हार्डिमेन,डेविड (2003), गांधी इन हिज टाइम एंड ओर द ग्लोबल लेजेसी ऑफ हिज आइडियाज ,ओरिएंट ब्लैकस्वान,न्यू दिल्ली।

18. कौशिक,आशा(2001), पॉलिटिक्स सिम्बोल एंड पॉलिटिकल थियरी: रिथिंकिंग गांधी,इंटरनेशनल स्पेशलाइज्ड बुक सर्विस इनकॉरपोरेट,यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन।
19. चक्रबर्ती, मोहित,(2012), द गांधियन फिलासफी ऑफ स्पिनिंग व्हील कांसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी,न्यू दिल्ली।
20. कुलकर्णी, सुधींद्र, म्यूजिक ऑफ द स्पिनिंग व्हील महात्मा गांधी मैनिफेस्टो फॉर द इंटरनेट एज, एनालिसिस, न्यू दिल्ली - 11021।
21. बंधोपाध्या, शेखर,(2018), प्लासी से विभाजन और उसके बाद,ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड,न्यू दिल्ली।